ज्योतिषशास्त्रमें विभिन्न आचार्यों अनुसार द्वादशभावों का संशोधात्मक अध्ययन

Dr. Chetan K. Pandya

॥ सारांश ॥

संस्कृत वाङ्मय में मुख्यशास्त्रों का आधार वेद है। वेद के छ (६) अंगों में से ज्योतिष कोनेत्र कहा गया है।

“ज्योतिषं नेत्रं उच्यते” | पा.शि.

होराशास्त्र में होरा शब्द की व्युत्पत्ति अहोरात्र शब्द से हुई है। अहोरात्र होरा शब्द के पूर्वापर वर्णानुलोप से ‘होरा’ शब्द बना है। होरा यह कालवाचक शब्द भी है। १ होरा अर्थात् १५ अंश अथवा १ घण्टा। १ होरा की २½ घटी होती है और २ होरा = ३० अंश से १ लग्न बनता है। १ लग्न को व्यतीत होने में २ घण्टे (५ घटी) लगती है, १ अहोरात्र में १२ लग्नराशियां व्यतीत होती है। होराशास्त्र से मनुष्य जीवन का भूतकाल-भविष्य-वर्तमानकालज्ञात हो सकता है। पूर्वजन्म के कर्मानुसार ही जन्मकुण्डली बनती है, उसी जन्मकुण्डली के अनुसारजातक जन्म से मरण पर्यन्त को फल प्राप्त होता है।

विभिन्न आचार्योंने अपने ज्ञान, अनुभव और मेहनत से होराशास्त्र का निर्माण किया है। वराहमिहिरचार्य, कल्याणवर्मा, पराशरादि आचार्यों ने द्वादशभाव का अपनी समझ और भाषा में प्रस्तुतिकरण किया है।

होराशास्त्र जीवन का मूलाधारण है जिससे जीवन के शुभफल देने वाले समय में अभ्युदय, प्रगति कर शके और अशुभ फल देनेवाले समय में वैदिक उपाय पूजा दान-जाप से सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं। अतः होराशास्त्र और होराशास्त्री दोनों ही महान और पूजनीय हैं।

शब्दावली [होरा,अहोरात्र,लग्न]

प्रस्तावना:

संस्कृतवाङ्मय में मुख्य शास्त्र का आधार वेद है। वेद को समझने के लिए आचार्यों ने छ (६) अंगों को स्वीकारा है। जैसा कि हम सब जानते हैं, छ अंगों में ज्योतिष को नेत्र की तरह स्वीकार किया है।

“ज्योतिषं नेत्रं उच्यते” पा.शि.

आचार्य पाणिनीय ने केवल ज्योतिष को नेत्र का स्थान नहीं दिया, अपितु ज्योतिषशास्त्र के तीनों स्कन्ध सिद्धान्त, संहिता और होरा को मिलाकर तीनों स्कन्ध का एक दूसरे के साथ समन्वय है एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और तीनों को सम्मिलित कर ज्योतिषशास्त्र को वेदाङ्ग में नेत्र कहा गया है।

ज्योतिषशास्त्र में सिद्धान्त और संहिता ग्रन्थों का विश्लेषण और अध्ययन न करे, तब तक होराशास्त्र अनुसार फलादेश करना पूर्ण नहीं माना जायेगा। होराशास्त्र मनुष्य के जन्म से मृत्यु पर्यन्त और दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है। ज्योतिषशास्त्र में होराशास्त्र के विभिन्न आचार्यों ने होरा को आध्यात्मिक, भौतिक एवं दैनिक जीवन का आधार मानकर फलादेश करते हैं। क्योंकि होरा का अर्थ ही काल, समय, अवधि, अहोरात्र है।

❖ होरा शब्द की व्युत्पत्ति

होराशास्त्र में होरा शब्द की व्युत्पत्ति अहोरात्र शब्द से हुई है। “आद्यन्तवर्णलो-पाद्धोराहोराशास्त्रं भवत्यहोरात्रात्” अर्थात् अहोरात्र शब्द के आदि - अन्त - पूर्वापर वर्ण के लोप होने से होरा शब्द उत्पत्ति हुई। वराहमिहिराचार्य ने अपनी पुस्तक बृहज्जातक के प्रथम अध्याय के तृतीय श्लोक में होरा शब्द की व्युत्पत्ति कही है।

“होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्तिपूर्वापरवर्णलोपात्।

कर्माजितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पकितं समभिव्यनकित” (बृहज्जातक १.३)

अर्थात् अहोरात्र शब्द का अर्थ अहो यानि दिन (दिवस) रात्र मानी रात्रि होता है। (अहोरात्र = दिनरात्रि, ६० घटी, २४ hours) अहोरात्र के पूर्ववर्ण “अ” और परवर्ण (अन्तिमवर्ण) “त्र” का लोप होने से होरा शब्द रहता है।

❖ होरा आधारित कालगणना:-

होरा अर्थात् १ राशी के दो भाग। १ राशी = ३० अंश, एक राशि में दो होरा होती है $30 \div 2 = 15$ अंश इसलिए १५ अंश कि १ होरा बनती है। होराकुण्डली के अनुसार विषमराशि में प्रथम १ से १५ अंश की सूर्य की होरा होती है और १६ अंश से ३० अंश कि चन्द्र की होरा होती है। समराशी में १ से १५

अंश की प्रथम होरा चन्द्र की बनती है और १६ अंश से ३० अंश कि द्वितीयसूर्य की होरा बनती है । जिस तरह १२ राशियां होती है, उसी प्रकार कुण्डली के १२ भाव होते है । (३० अंश x १२ = ३६० अंश = १ भचक्र) समयानुसार (कालानुसार) गणना करे तो १ अहोरात्र = ६० घटी (24 hours) होते है । १ अंश = ४ मिनिट । १ अहोरात्र में १२ लग्न (राशि) पूर्ण होते है अर्थात् १२ लग्न पूर्ण होने पर ६० घटी की अवधि होती है । ६० घटी ÷ १२ लग्न (राशि) = ५ घटी (१ लग्न राशि) , १ लग्न राशि को ५ घटी लगती है तो १ होरा (१५ अंश) को २½ घटी (१ घण्टा) होती है । आधुनिक समय अनुसार १ लग्न व्यतित होने में सरेराश २ घण्टे लगते है । १ लग्न का भोग्यकाल २ घण्टे (५ घटी) होती है ।

❖ होराशास्त्र का महत्व एवं हेतु

“कर्मजितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्यपत्तिसमभिव्यनक्ति” । (बृहज्जातक)

अर्थात् - पूर्वभव के कर्म अनुसार ही जन्मकुण्डली बनती है जन्मकुण्डली अनुसार ही जीवन के सुख और दुःख की प्राप्ति होती है ।

“विधाता लिखिता याऽसौ ललाटेऽक्षरमालिका ।

दैवज्ञस्तां पठेद्व्यक्तं होरानिर्मलचक्षुषा ” ॥ (सारावलि २.१)

अर्थात् - विधाता द्वारा जिवन के ललाट पर अंकित हुई अक्षरमालिका, दैवज्ञ होराशास्त्ररूपीनिर्मल चक्षुसे पढकर फलकथन कहते है ।

“कर्मफललाभहेतुं चतुराः संवर्णयन्त्यन्ते ।

होरेति शास्त्रसंज्ञा लग्नस्य तथार्धराशेश्च ” ॥ (सारावलि २.३)

अर्थात् - विद्वानजन कर्मफललाभ प्राप्ति हेतु बोध करानेवाले शास्त्र को होराशास्त्र कहते है एवं लग्न राशी के अर्धभाग को होरा कहते है ।

होराशास्त्र धनोपार्जन करने में सहाय करते है, जिवन कीशुभदशा में लाभविजयादि मिलते है एवं अशुभदशा में दुःख और पराजय से रक्षण प्राप्त होता है । स्वयं को सुरक्षित रख सकते है । जिस तरह विपत्तीरूप समुद्रमें नौका वा जहाज का कार्य करता हैएवंयात्रा के समय में मन्त्री अर्थात् उत्तम सलाहकार होराशास्त्रकोछोडकर अन्य कोई नहीं हो सकता है ।

❖ विभिन्न आचार्यों द्वारा होराशास्त्र का निरूपण

विभिन्न आचार्यों ने अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर द्वादशभावों का निरूपण किया है। इन में से मुख्य आचार्यों के निरूपण प्रस्तुत है।

वराहमिहिरचार्य के बृहज्जातक, लघुजातक, कल्याणवर्माकृत सारावली, जीवनाथकृत भावप्रकाश, गणेशदैवज्ञकृतजातकालंकार, पाराशरकृत बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, लघुपाराशरी, मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका, श्रीपतिविरचित जातकपद्धति, वैधनाथकृत जातकपारिजातक, कालिदासकृत उत्तरकालामृत, पृथुयशसाकृत षट्पञ्चाशिका इस प्रकार विभिन्न आचार्याने अपनी अपनी पुस्तकों में द्वादशभाव का निरूपण व्यक्त किया है, किन्तु विशेषकर यवनाचार्यकृत बृहद्यवनजातक में द्वादशभावाधारित फलादेश के विशेष नियम और प्रकार प्रकाशित किये हैं। मीनराजकृत बृहद्यवनजातक में द्वादशभावों में ग्रहों के विभिन्न कोण से फलादेश कहा गया है।

प्रायः द्वादशभावों की संज्ञा इस प्रकार सभी आचार्याने की है, इनमें से कुछ आचार्यों की संज्ञा प्रस्तुत कर रहा हूँ।

देह द्रव्यपराक्रमौ सुखसुतौ शत्रुः कलत्रं मृति-

भाग्यं राज्यपदं क्रमेण गदिता लाभव्ययौ लग्नतः।

भावा द्वादश तत्र सौख्यशरणं देहं मतं देहिनां-

तस्मादेव शुभाशुभख्यफलजः कार्यो बुधैर्निर्णयः ॥(जातकालङ्कार १.५)

अर्थात् - लग्न से क्रमशः देह, धन, पराक्रम, सुख, सुत, शत्रु, कलत्र, मृत्यु, भाग्य, राज्य, लाभ एवं व्यय भाव कहे गये हैं। इनमें मनुष्य को शारीरिक सुख शरणरूप माना गया है, इसीलिए उससे ही विद्वानों को शुभाशुभ का निर्णय करना चाहिए।

“तनुकोशसहोदरबन्धुसुता रिपुकामविनाशशुभाः विबुधैः।

पितृभं तत आसिरपाय इमे क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः ॥(भावप्रकाश १.७)

अर्थात् - तनु, कोश, सहोदर, बन्धु, सुत, रिपु, काम, विनाश, शुभ, पितृ, आसि और अपाय इस क्रमसे प्रमुख वराहमिहिरचार्य ने कहा है।

होरादयस्तनुकुटुम्बसहोत्थबन्धु पुत्रारिपत्निमरणानि शुभास्पदायाः। रिष्फारव्यमित्युषचयान्यरिकर्मलाभ दुश्चिक्वसंज्ञितगृहाणि न नित्यमेके ॥(बृहज्जातकम् १.१५)

अर्थात् -तनु, कुटुम्ब, सहोत्थ, बन्धु, पुत्र, अरि, पत्नि, मरण, शुभ, आस्पद, आय तथा रिष्क यह लग्नादी द्वादशभावों कि संज्ञा है | ६, १०, ११, ३ इन स्थानों कि उपचय (वृद्धि) संज्ञा है | यहनित्य उपचय नहीं है ऐसा कितने आचार्यों का मत है |

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् |

सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ||(बृहद्यवन जातकम् १.१)

बृहद्यवन जातकम् में ऊपर दिए उच्चरण कि तरह प्रत्येक भावों का विस्तार से विश्लेषण किया है |

तन्वर्थसहजबान्धवपुत्रारिस्त्रीविनाशपुण्यानि |

कमार्यव्ययभावा लग्नाद्याभावतश्चिन्त्या ||(सारावली ३.२६)

अर्थात् -तन, अर्थ, सहज, बान्धव, पुत्र, अरि, स्त्री, विनाश, पुण्य, कर्म, आय, तथा व्ययादी भाव कि लग्नसे उस उस भाव का चिन्तन करे |

❖ उपसंहार

होराशास्त्र जीवन का अभिन्न अङ्ग है | जिससे हम अपने जीवन को सुरक्षित और सफल कर सकते हैं | 'होरा' काल का ही एक द्वितीय स्वरूप है | विभिन्न आचार्योंने स्वकीय अनुभव ज्ञान और महेनत से प्रस्तुत किया है | वराहमिहिराचार्य, कल्याणवर्मा, पराशरादि आचार्याने अपने-अपने ज्ञान और बुद्धि से जो निरूपित किया है, वह हम पुस्तक के स्वरूप में पाकर लाभान्वित हुए हैं | अतः होराशास्त्र एवं होराशास्त्र बनानेवाले - जाननेवाले अपने आप में महान- पूजनीय हैं |

संदर्भित पुस्तके

१. बृहज्जातक
२. सारावली
३. जातकालङ्कार
४. फलदीपिका
५. बृहद्यवनजातक
६. वृद्धयवनजातक
७. भावप्रकाश

Dr. Chetan K. Pandya
Upadhyapaka
Baroda Sanskrit Mahavidyalaya
Maharaja Sayajirao University of Baroda
VADODARA - 390005, Gujarat.
Mobile : 9825760880
E-mail : chetanpandya1212@gmail.com